RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना का रोजगार सृजन में योगदान (बिड़ोली ग्राम के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन)

सत्येन्द्र

सह आचार्य विभाग, समाजकार्य एवं समाजशास्त्र वनस्थली विद्यापीठ–(राज॰)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
दीनदयाल ग्रामीण कौशल योजना, रोजगार

ABSTRACT

भारत एक कल्याणकारी राज्य है, जो संवैधानिक नियमों पर आधारित है। जहां कानून का शासन है, जिसमें प्रत्येक नागरिक के कल्याण हेतु कार्य करता है। जिसमें सरकार जनता की भलाई के लिए कार्य करती है, जिसका प्रमुख साधन कल्याणकारी योजनाएं है। जिसकी शरूआत 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम से हुई। वर्तमान तक यह निरन्तरता बनी हुई है। इसी क्रम में प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण कौशल योजना का रोजगार सृजन में योगदान का अध्ययन किया गया है।

भारत गाँवों का देश है, वर्तमान में भारत में 62.80 प्रतिशत ग्रामीण आबादी है। महात्मा गाँधी के दर्शन में यह कथन सर्वमान्य थी कि भारत का विकास गाँव से होकर गुजरता है, यदि भारत का विकास करना है तों गाँव का विकास करना होगा। इसलिए भारत सरकार का ग्रामीण विकास हेतु स्वतन्त्रता के बाद से ही अधिक बता रहा है। 1952 में ही भारत के द्वारा सामुदायिक विकास का र्सक्रम की शुरूआत कि गई है। जो ग्रामीण लोकतान्त्रिक व्यवस्था का आधार भी रही है।[1]

दीनदयाल उपध्याय ग्रामीण कौशल योजना की शुरूआत राष्ट्रीय जन तान्त्रिक गठबन्धन की सरकार ने 25 सितम्बर 2014 को उपाध्याय जी के 98 वें जन्म दिवस पर की गई थी। जिसका लक्ष्य ग्रामीण युवाओं को रोजगार प्रदान करना था। इसका माध्यम प्रशिक्षण रखा गया तथा इसको राष्ट्रीय ग्रामीण अर्जीविका मिशन के साथ जोड़ा गया।[2]

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं को निपुण किया जाता है तथा सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ऋण प्रदान करके उनको स्वरोजगार हेतु प्रेरित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से उक्त योजना की रोजगार सृजन में भूमिका का अध्ययन बिड़ोली ग्राम के विशेष सन्दर्भ में किया गया है। बिड़ोली ग्राम राजस्थान के टोंक जिले के निवाई तहसील में स्थित है।

[1]नायर, राजकुलदीप, ''कम्युनिटीडवलपमेंटप्रोग्राम'' द इकॉनोमिकवीकली, सितम्बर 1960

[2]http//ddugky.gov.in

❖ अध्ययन प्रविधि–:

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु गुणात्मक अध्ययन प्रविधि का प्रयोग करते हुए, सुविधाजनक एवं उद्देश्यपूर्ण के साथ–साथ कथनात्मक रूप से आंकड़ों का संकलन प्राथमिक रूव से किया गया है। जिसमें वैथानिक अध्ययन पद्धति के माध्यम से तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है।

❖ साहित्य पुनरावलोकन–:

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु साहित्य पुनरावलोकन किया गया जिसमें सिंह, कटार ने अपनी पुस्तक ''ग्रामीण विकास, सिद्धान्त, नीतियों एव सन्दर्भ में वर्णन किया गया है। वहीं गंगरोड, के.डी. ने अपनी पुस्तक ''गाँधीजी के आदर्श और ग्रामीण विकास'' में ग्रामीण विकास में युवावर्ग की स्वरोजगार हेतु कार्यक्रम, कृषि, कुटीर उद्योग इत्यादि पर बल दिया है जिसमें स्थानीय सरकार एवं ग्रामीण आपसी समझ विकसित कर ग्रामीण विकास में योगदान देंगे।

उपयुक्त साहित्य पुनरावलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विकास से सम्बन्धित अध्ययन में योजनाओं एवं नीतियों पर अध्ययन पहले से ही रूचि कर रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में

अध्ययन के उद्देश्य–

1. दीनदयाल उपध्याय ग्रामीण कौशल योजना का रोजगार सृजन में योगदान का अध्ययन करना।
2. शोध पत्र हेतु प्राथमिक रूप से तथ्यों को संकलित किया गया है जिसमें उत्तरदाताओं से साक्षत्कार के आधार पर तथ्यों को विश्लेषित किया गया है जिसे के रूप में प्रस्तुत अध्ययन में वर्णन किया गया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

केस संख्या–1

आपको दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के बारे में कैसे पता चला?

''हमारे गाँव में ग्रामसभा की मीटिंग हुई थी, जिसमें सरपंच महोदय के द्वारा बताया गया कि ग्रामीण युवाओं के लिए भारत सरकार ने रोजगार योजना चलाइ है, जिसमें पहले काम सिखाया जाएगा और उसके बाद युवा खुद का काम कर सकेंगे। तभी से मुझे इससे जुड़ने का मन बना लिया था।''

उत्तरदाता क,ख,ग,

स्त्रोत–: (फील्ड वर्क डेटा)

उपर्युक्त साक्षात्कार से प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित किया जाए तो स्पष्ट हो रहा है कि उतरदाता को ग्रामसभा के माध्यम से ज्ञात हुआ कि इस प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही है। जिससे रोजगार को बढ़ावा मिल सकें।

केस संख्या–2

दीनदयाल उपाध्याय योजना के बारे में आपके कया विचार है?

दीनदयाल उपाध्याय योजना के अन्तर्गत मेरा पंजीकरण टोंक म ंहुआ था, जहां 6 महिने के प्रशिक्षण के बाद मुझे प्रमाण पत्र दिया गया। वर्तमान में मेरी अपनी खुद की मैकनिक की दुकान है, तथा प्रतिदिन 400 या 500 रु दिन में कमा रहा हूँ यह इसी योजना के माध्यम से पूर्ण हो सका मैं तो कहूंगा मेरे लिए यह वरदान सांबित हुई।

उतरदाता, य,र,ल,व,,

(स्त्रोत–फील्डवर्क डेटा)

उपर्युक्त तथ्यों को विश्लेषित किया जाए तो स्पष्ट होता है दीनदयाल उपाध्याय योजना से उतरदाता में कौशल विकास हुआ तथा रोजगार प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है। 6 महिने के प्रशिक्षण के बाद यदि रोजगार प्राप्त हो रहा है तो साथ में आने जाने का किराया भी सरकार प्रदान कर रही है।

केस न 03

दीनदयाल उपाध्याय योजना ने कैसे आपको रोजगार प्रदान किया।

''मैने कक्षा 10 के बाद खेल मै काम शुरू कर दिया था हमारा संयुक्त परिवार था, जिसके कारण सभी लोग खेती पर ही निर्भर थे, तभी हम लोगों को पता चला कि इस प्रकार की योजना है तो मैनें और मेरे चचेरे भाई ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा वर्तमान में 5000/ हजार प्रति व्यक्ति रोजगार प्राप्त किया।

स्त्रोत–: (फील्ड वर्क डेटा)

दीनदयाल उपाध्याय योजना के अन्तर्गत एक परिवार में संयुक्त रूप से खेती पर निर्भर थे उक्त योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद रोजगार देने में सहायता प्रदान करती है।

परिणाम एवं चर्चा–:

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना रोजगारोन्मुख तो है ही, बल्कि यह ग्रामसभा एवं ग्रामपंचायतों का सभक्त करन में अहम योगदान दिया है।

यह योजना महिला सशक्तिकरण में भी अहम योगदान दे रही है। महिला प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार में योगदान दे रहे है। युवा वर्ग के लिए यह योजना एक मील का पत्थर साबित हा ंरही है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved